NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

M.H.D.-20

भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Vaishali Gupta*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-4
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

भारतीय दलित कविता

1. मराठी दलित कविता : 'वृक्ष' और 'माँ' 1
2. तेलुगू दलित कविता : 'गौरैया' और 'खून का सवाल' 7
3. पंजाबी दलित कविता : 'घोड़ा' और 'आज का एकलव्य' 12
4. गुजराती दलित कविता : 'माँ! मैं भला कि मेरा भाई', 'पड़' और 'व्यथा' 17

भारतीय दलित कहानी-I

5. 'जब मैंने जाति छुपाई' 25
6. 'बुद्ध ही मरा पड़ा है' 38
7. 'कवच' 49

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

8. 'रोटले को नजर लग गई' 60

9. 'गिद्धानुभूति' 70

भारतीय दलित कहानी-II

10. 'वर्णबोध और मधुबाबू की कहानी' और 'उम्मीद अब भी बाकी है' 81

11. 'गाँव का कुआँ' और 'परती जमीन' 85

12. 'अमावस' और 'मोची की गंगा' 91

13. 'हड्डा रोड़ी और रेहड़ी' और 'बिच्छू' 97

भारतीय दलित आत्मकथा

14. अक्करमाशी-I 106

15. अक्करमाशी-II 113

16. जीवन हमारा-I 119

17. जीवन हमारा-II 124

भारतीय दलित उपन्यास

18. 'मशालची' उपन्यास की कथावस्तु 129

19. 'मशालची' में चित्रित दलित जीवन 136

20. 'अस्पृश्य वसंत' उपन्यास की कथावस्तु 146

21. 'अस्पृश्य वसंत' में चरित्र चित्रण 153

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

M.H.D.-20

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक* ***समान*** *हैं।*

प्रश्न 1. तेलुगु दलित कविता में मौजूद सामाजिक चिंतन को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-7, 'परिचय', 'तेलुगु दलित कविता की विशेषताएं', पृष्ठ-9, प्रश्न-1

प्रश्न 2. पंजाबी दलित कविता 'आज का एकलव्य' की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-15, प्रश्न-3

प्रश्न 3. मराठी दलित साहित्य के संदर्भ में बाबूराव बागूल की वैचारिकी को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-27, 'बाबूराव बागूल : लेखन की वैचारिकी'

प्रश्न 4. 'कवच' कहानी में निहित दलित स्त्री की वेदना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-56, प्रश्न-2

प्रश्न 5. 'गाँव का कुआँ कहानी में वर्णित समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-88, प्रश्न-1, प्रश्न-2, पृष्ठ-89, प्रश्न-4

प्रश्न 6. कन्नड़ दलित साहित्य आन्दोलन की साहित्यिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-94, प्रश्न-1

प्रश्न 7. 'मशालची' उपन्यास की रचनात्मक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-135, प्रश्न-3

प्रश्न 8. 'अस्पृश्य बसंत' उपन्यास में वर्णित जातिगत समस्या पर एक निबंध लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-151, प्रश्न-3

प्रश्न 9. 'अक्करमाशी' के आधार पर भारतीय गाँव की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-108, 'भारतीय गांव और दलित भेद'

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) 'परती-जमीन' की भाषा-शैली

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-90, प्रश्न-9

(ख) 'अमावस' कहानी की कथावस्तु

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-95, प्रश्न-3

(ग) शरण कुमार लिंबाले का परिचय

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-106, 'शरणकुमार लिंबाले का रचना संसार'

(घ) 'बुद्ध ही मरा पड़ा है' कहानी का सार

उत्तर–अर्जुन डांगले की 'बुद्ध ही मरा पड़ा है' नामक कहानी सन् 1979 में प्रकाशित उनके मराठी कहानी संग्रह 'ही बांधावरची मागस' (उपेक्षित मानव) में संकलित है। इस कहानी में गाँवों के हाशिए पर जीवन जीने के लिए विवश लोगों पर अत्याचार एवं उत्पीड़न का उल्लेख किया गया है। इस कहानी के माध्यम से अर्जुन डांगले की प्रगाढ़ निरीक्षण शैली तथा व्यक्ति की संवेदना का आंकलन करने की क्षमता का पता चलता है। इस कहानी में दलित आंदोलन में सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के संघर्ष एवं नवजागृत दलित समाज के आपसी मतभेद का उल्लेख भी किया गया है। डॉ. अंबेडकर के पश्चात् उपयुक्त राजनैतिक एवं वैचारिक दर्शन के अभाव के कारण दलित आंदोलन प्रभावशाली नहीं रहा। अनेक अवसरवादी एवं स्वार्थी नेताओं के प्रभाव एवं अकुशल नेतृत्व में पथभ्रष्ट हुआ, यह आंदोलन पुनः गति नहीं पकड़ सका। राजनीतिक पैठ बनाने एवं असमान विचारधाराओं से संधि के कारण दलित आंदोलन के केन्द्रीय उद्देश्य पीछे छूट गए। साथ ही महाराष्ट्र प्रान्त में विभिन्न दलित जातियों के बीच उपजा अंतर्विरोध, रूढ़िवादी मानसिकता एवं अंतर्जातीय भेदभावों की आलोचनात्मक अभिव्यक्ति भी कहानी में की गई है। डॉ. अंबेडकर मानवीय क्षमता तथा बुद्धिवाद के समर्थक एवं व्यक्ति पूजा, मूर्तिपूजा, के विरोधी थे। उन्हीं की वैचारिकी से प्रेरित होकर अर्जुन डांगले ने अपनी कहानी में नवीन चेतना और बदलाव की चेतना को प्रज्ज्वलित रखा है, ताकि लोग परंपरागत अंधविश्वासों में उलझकर संकीर्णमति न हो जाएँ।

इस कहानी की भाषा बोलचाल की है। कहानी में देशज शब्दों का अधिक प्रयोग है। कहानी की शैली को देखें तो निरीक्षण शैली, विचारात्मक शैली, चित्रात्मक शैली आदि का मिला-जुला रूप है।

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

M.H.D.-20

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक* ***समान*** *हैं।*

प्रश्न 1. दलित साहित्य आन्दोलन में अर्जुन डांगले के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-44, प्रश्न-2

प्रश्न 2. गुजराती दलित साहित्य के उद्भव एवं विकास पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-17, 'परिचय', पृष्ठ-21, प्रश्न-1

प्रश्न 3. दलित साहित्य संबंधी नामदेव ढसाल के विचारों को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–नामदेव लक्ष्मण ढसाल भारत के महाराष्ट्र के एक मराठी कवि, लेखक और दलित कार्यकर्ता थे। वे 1972 में दलित पैंथर्स के संस्थापकों में से एक थे, जो एक सामाजिक आंदोलन था, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज में जाति पदानुक्रम को नष्ट करना था। यह आंदोलन 1970 और 1980 के दशक में सक्रिय था। इस दौरान इसने भारत में दलित शब्द के उपयोग को लोकप्रिय बनाया। ढसाल को 1999 में पद्मश्री और 2004 में साहित्य अकादमी से लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

अमेरिकी ब्लैक पैंथर आंदोलन के उदाहरण का अनुसरण करते हुए उन्होंने 1972 में दोस्तों के साथ दलित पैंथर आंदोलन की स्थापना की। इस सामाजिक आंदोलन ने फुले, शाहू और अंबेडकर आंदोलनों के आधार पर समाज के पुनर्निर्माण के लिए काम किया।

ढसाल ने मराठी दैनिक 'सामना' के लिए कॉलम लिखे। इससे पहले उन्होंने साप्ताहिक 'सत्यता' के लिए संपादक के रूप में काम किया था। 1972 में उन्होंने अपनी कविता का पहला खंड 'गोलपीठा' प्रकाशित किया। इसके बाद और भी कविता संग्रह आए–'मूर्ख म्हातारायणे' (एक मूर्ख बूढ़े आदमी द्वारा), 'माओवादी विचारों से प्रेरित', 'तुझी इयत्ता कांची?' (आप कितने शिक्षित हैं?), 'खेल' और 'प्रियादर्शिनी'।

इस दौरान ढसाल ने दो उपन्यास भी लिखे 'अंधाले शतक' (सेंचुरी ऑफ ब्लाइंडनेस) और 'अंबेडकरी चालवाल' (अंबेडकरवादी आंदोलन)।

उग्र जाति-विरोधी आंदोलन और उसके दर्शन ने विभिन्न तरीकों से अन्य सामाजिक आंदोलनों को बहुत प्रभावित किया है। दलित पैंथर आंदोलन (डीपीएम) दूसरों के बीच सबसे लोकप्रिय है। इस आंदोलन और इसके सदस्यों ने न केवल प्रतिरोध के सांस्कृतिक और साहित्यिक स्थान को मौलिक रूप से बदलने में योगदान दिया, बल्कि 1970 के दशक के बाद पैदा हुई जाति-विरोधी पीढ़ियों के बीच आत्मविश्वास की एक बड़ी भावना भी पैदा की। इसका क्रांतिकारी चरित्र और न्याय के लिए लड़ने के तरीके आज भी लाखों दलितों को प्रेरित करते हैं। इस तथ्य से कोई इनकार नहीं कर सकता कि सामाजिक-राजनीतिक और साहित्यिक चेतना को व्यक्त करने या प्राप्त करने में ढसाल का कई पीढ़ियों पर अपूरणीय प्रभाव रहा है। कोई भी देख सकता है कि वर्तमान समय में राजनीतिक क्षेत्र पर स्वार्थ और आत्मकेन्द्रितता का कब्जा हो गया है। हालांकि नामदेव ढसाल जैसे नेताओं और कट्टरपंथी कार्यकर्ताओं ने क्रांतिकारी लेखन के माध्यम से सामाजिक-राजनीतिक जाति पदानुक्रमित संरचनाओं को चुनौती दी है। उनके शब्द जाति-ग्रस्त समाज के सदियों पुराने इतिहास के बारे में हैं। ढसाल के अनुसार उनकी कविता पारंपरिक रंगमंच, तमाशा और ज्योतिराव फुले और बाबासाहेब अम्बेडकर के जाति विरोधी विचारों से प्रभावित है। इनके साथ ही ढसाल राममनोहर लोहिया के विचारों से भी प्रभावित थे। कुल मिलाकर ढसाल अम्बेडकरवादी और समाजवादी सोच से प्रभावित थे।

प्रश्न 4. 'जब मैंने जाति छुपाई' कहानी में अभिव्यक्त जातिभेद की जटिलता को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-37, प्रश्न-6

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

भारतीय दलित कविता

मराठी दलित कविता : 'वृक्ष' और 'माँ'

1

परिचय

डॉ. अंबेडकर की वैचारिकी और मुक्ति की इच्छा भी मराठी दलित कविता की प्रेरणा रही है। डॉ. अंबेडकर के विचारों की रोशनी ने सदियों से अंधकार में रहने वाले समाज में चेतना जागृत की, जिससे इस मूक समाज ने शोषण और उत्पीड़न का विरोध किया। दलित साहित्य के सभी लेखक एक समतामूलक समाज के निर्माण के लिए वचनबद्ध हैं। इन साहित्यकारों के लेखन का मुख्य उद्देश्य जातिमुक्त, शोषणमुक्त और भयमुक्त समाज का निर्माण करना है।

इसी श्रृंखला में रचनाकार दया पवार और ज्योति लांजेवर का नाम आता है जिन्होंने मराठी दलित साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। दोनों ही रचनाकारों ने अपने गद्य व कविताओं द्वारा मराठी साहित्य को समृद्ध बनाया है। दया पवार की 'अछूत' जोकि एक आत्मकथा है, को इस विधा का प्रथम पग माना जाता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

मराठी दलित साहित्य की पृष्ठभूमि

दलित साहित्य का आरंभ स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही हो चुका था किंतु इसे मूल प्रेरणा शक्ति डॉ. अंबेडकर की वैचारिकी से मिली। डॉ. अंबेडकर ने भारत के संविधान के घोषणा पत्र में समाज में समानता को बनाए रखने वाले नियमों को सम्मिलित किया किंतु स्वतंत्रता के इतने वर्ष गुजर जाने के पश्चात भी दलितों को मुक्ति नहीं मिली। दलित साहित्य समाज में बदलाव तथा एक समतामूलक समाज के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है। अपनी आजादी की प्रेरणा से वचनबद्ध इस वैचारिकी ने ही इस बहिष्कृत समाज की पीड़ा, वेदना तथा भावना को शब्द दिये हैं। विश्व के अनेक राष्ट्रों में साहित्यिक क्रांति ने अपना रंग दिखाया है। दलित साहित्य का आंदोलन भी इसी प्रकार का मुक्ति आंदोलन है जिस समय महात्मा गाँधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम छेड़ा गया था उसी समय पर न्यायमूर्ति रानाडे, आगरकर गोखले द्वारा समाज में फैली विकृतियों को दूर करने के प्रयास शुरू हो चुके थे। इन सभी समाज सुधारकों का मानना था कि बिना सामाजिक-सांस्कृतिक सुधारों के आजादी का कोई अर्थ नहीं है। डॉ. अंबेडकर जानते थे कि यदि आजादी की लड़ाई के साथ-साथ समाज की आंतरिक व्यवस्था को भी सुधार लिया गया तो ही आजादी का अर्थ होगा इसीलिए वह इस संबंध में लगातार, महात्मा गाँधी से विचार-विमर्श करते रहते थे। केवल ऊपरी स्वतंत्रता से देश का विकास नहीं हो पाएगा। समाज में फैली अस्पृश्यता, जातिगत व्यवस्था, देश के आर्थिक विकास और मानव विकास में बाधा अवश्य बनेगी। डॉ. अंबेडकर के भरसक प्रयासों के बाद भी समाज के ढांचे में परिवर्तन नहीं आया, जिसके परिणामस्वरूप संपदा का बंटवारा भी असमान ही रहा। सवर्ण समाज मालिक और दलित समुदाय मजदूर बनकर रह गया। खेतों में मेहनत करके अनाज उगाने वाला निम्न वर्ग भूखा मरता है। मनुष्य ही मनुष्य को गुलाम बना रहा है और निम्न वर्ग इसे अपना कर्मफल मानकर चुपचाप स्वीकार करता है। हीनभावना से ग्रसित निम्न वर्ग की पहचान उनके पेशे से बन गई। इन्हें और इनके काम को तुच्छ मानकर इन्हें समाज से बाहर ही रखा गया। श्रेष्ठता को बोध रखने वाले सवर्ण समाज ने इन पर अत्याचार भी किये, किंतु कभी-कभी व्यक्ति के भीतर की चेतना जाग्रत होती है और वह अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाता है। ऐसा ही भारतीय सामाजिक संरचना में भी हुआ, जब दलित साहित्य ने दलित चेतना को जाग्रत किया।

मराठी दलित कविता की वैचारिकी प्रतिबद्धता

दलित साहित्य का केन्द्र बिंदु वह वर्ग है जिसे बिना किसी गुनाह के समाज में एक बहिष्कृत जीवन जीने पर बाध्य किया गया और इस बाध्यता के पीछे वेद पुराण रहे थे। इस सामाजिक व्यवस्था का आधार ईश्वर बताकर इसे मान्यता दी गई थी।

www.neerajbooks.com

सामाजिक संरचना में कोई एक जाति किसी दूसरी जाति या वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकती। जाति व्यवस्था का जाल मनु ने बुना था। चातुर्वर्ण्य व्यवस्था को वेद-पुराणों के आधार पर तार्किक बताया तथा धर्म व पाप-पुण्य के भय दिखाकर इसे अपरिवर्तनीय बताया गया। दलित समुदाय तीन हजार वर्षों से इस ज़हर को पीता आ रहा है। दलित साहित्य इस गुलामी के विरोध की आवाज है। दलित साहित्य ने इन्सान को महत्त्व दिया है, इसलिए उन्होंने धर्म से इंकार किया है जिसने मनुष्य को गुलाम बनाया है। मराठी दलित साहित्य शोषित उत्पीड़ितों की वेदना- पीड़ा तथा आशा-आकांक्षाओं को शब्द प्रदान करता है। दलित कविता का नायक कोई एक व्यक्ति नहीं एक समाज है, क्योंकि ये संघर्ष किसी एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से नहीं है बल्कि एक वर्ग का दूसरे वर्ग से है। दलित कविता की शुरुआत सर्वप्रथम मराठी भाषा से हुई थी किंतु अब इसका प्रसार सभी भारतीय भाषाओं में हो चुका है। डॉ. अंबेडकर के विचारों से प्रेरित दलित कविता समाज से जाति व्यवस्था को नष्ट करने के लिए प्रतिबद्ध है। मराठी के कवि नामदेव ढसाल ने भारतीय समाज व्यवस्था को एक नए समाजवादी समाज में बदलने का सपना देखा है। उन्होंने अपने इस स्वप्न को अपनी कविता में उतारा है। वे अपनी कविता में उल्लेख करते हैं कि इस जर्जर सामाजिक व्यवस्था को खत्म करके नई व्यवस्था के निर्माण की अत्याधिक जरूरत है।

रचनाकार: व्यक्तित्व एवं रचनाबोध

दया पवार

दया पवार का मराठी दलित साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। पवार जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं, इन्होंने कविता, कहानी, आत्मकथा तथा निबंध आदि सभी विधाओं में लेखन किया है। इनकी मुख्य कविता संग्रहों में 'कोंडवाड़ा' (कांजी घर) 1974 तथा 'पाणी कुठवर आलंग बाई।' (सखी पानी कहाँ तक आया?) शामिल हैं। इन्होंने अपने बहुचर्चित काव्य संग्रह' कोंड़वाड़ा' में दलित जीवन के कड़वे अनुभवों को बहुत ही मार्मिक ढंग से तथा विद्रोही स्वर में अभिव्यक्त किया। दलित वर्ग जो संताप सदियों से सह रहा है वो इन्होंने अपनी कविता के माध्यम से समाज के समक्ष रखा है। 'बलुतं' (अछूत) दया पवार द्वारा रचित आत्मकथा है, जोकि भारतीय दलित साहित्य की प्रथम आत्मकथा है, जिसमें समाज की वर्णवस्था की अमानुषता को दर्शाया गया है। दया पवार को अमेरिका के 'फोर्ड फाउंडेशन अवार्ड' तथा भारत सरकार के 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इनके दो कहानी संग्रह हैं, 'विटाळ' (छुआ-छूत) 'चावड़ी' चौपाल, इनमें संकलित कहानियों में दलित जीवन के पीड़ादायी व कड़वे अनुभवों को व्यक्त करके दलित जीवन की यथार्थता को दर्शाया गया है। इसके अलावा भी दया पवार ने बहुत से गीतों की रचना भी की है जिन्हें अनेक प्रतिष्ठित गायकों ने गाया है। इनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं 'बलुत', 'कोंडवाडा', 'विटाळ' ये रचनाएँ अनेक विश्वविद्यालयों पाठ्यक्रमों में शामिल हैं तथा इनका अनुवाद अनेक भाषाओं में हो चुका है।

ज्योति लांजेवार

ज्योति लांजेवार मराठी साहित्य की एक सशक्त कवियत्री हैं। इनके कई कविता संग्रह प्रकाशित हैं। इसके अलावा ये एक प्रतिष्ठित समीक्षक भी हैं। इनके समीक्षात्मक ग्रंथ हैं 'दलित साहित्य समीक्षा' 'फुले अंबेडकर स्त्री मुक्ति चळवळ, (फुले अंबेडकर : स्त्री मुक्ति आंदोलन) इनकी कविता में एक ऐसी 'माँ' की कहानी है जो दिन-रात श्रम करती है, बच्चों को शिक्षित करना चाहती है तथा कठोर परिश्रम से जीवन में प्रगति की इच्छा रखती है।

'वृक्ष' कविता का पाठावलोकन

मराठी दलित कवि दया पवार की कविता 'वृक्ष' तथा ज्योति लांजेवर की कविता 'माँ' दोनों कविताएँ दलित ह्दय की वेदाना को व्यक्त करती हैं। दया पवार ने वृक्ष के माध्यम से दलित समुदाय की पीड़ा की व्याख्या की है।

जाति दंश की मर्मांतक वेदना

दलित कविताएँ दलित वर्ग के जीवन की यर्थाथता को व्यक्त करती हैं। दया पवार की कविता 'वृक्ष' भी एक ऐसी ही कविता है जो दलित जीवन के सामुदायिक दुख, वेदना, विवेचना, जाति विरोध, आक्रोश, आर्थिक अभाव आदि को व्यक्त करती है। समाज में तुच्छ-हीन समझे जाने वाले गुह-समुदाय के मन के भावों को दलित कविताओं ने अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन कविताओं में विद्रोह और आक्रोश के स्वर हैं। यह विद्रोह उस अतार्किक व्यवस्था के विरुद्ध है, जिसके आधार पर समाज में असमानता का विष फैलाया गया। इस व्यवस्था को धार्मिक मान्यता देकर ब्राह्मण ने स्वयं को उच्च जाति का बताया तथा गुहों को गुलामों का जीवन जीने पर मजबूर किया। किंतु अब दलित कवियों ने इस षडयंत्र को पहचाना है और इससे मुक्ति के लिए ही अपनी आवाज उठाई है। वरिष्ठ दलित कवि वामन निंबालकर ने इस शोषण से भरी व्यवस्था के संदर्भ में कहा है कि इसकी कथा-व्यथा शब्दों में नहीं समा सकती 'यदि कहें तो शायद ह्दय के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं। इसी प्रकार दया पवार ने दलित समुदाय द्वारा सदियों से सही जा रही इस यातना, पीड़ा, व्यथा को एक जीता जागता 'वृक्ष' बनाकर प्रस्तुत किया है। दलित कवि ने मानव के सम्मान को सबसे ऊपर माना है इसीलिए इस अमानवीयता के विरोध में अपना विरोध प्रकट किया है। दलित कवियों ने तीन हजार वर्षों से चली आ रही इस गुलामी को खत्म करने के लिए आंदोलन छेड़ा है। डॉ. अंबेडकर के विचारों का अनुसरण करने वाला ये समाज भविष्य से इस अंधकार को दूर करने के प्रयत्न कर रहा है।

वर्णव्यवस्था को प्रश्नांकित करती कविता

दया पवार ने दलितों की दुर्दशा को व्यक्त करने के लिए 'वृक्ष' कविता में कहा है कि यह वृक्ष सभी ऋतुओं में झुलसा हुआ

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

है। वृक्ष के प्रतीक से अछूतों के जीवन की त्रासदी को व्यक्त किया गया है। इस स्वतंत्र देश में भी इन साधनविहीनों को दरिद्रता के चक्र में फंसाए रखने की बर्बरता को कवि ने समर्थक एवं सही हुए शब्दों में व्यक्त किया है अभी भी अमानवीय विषमता की दीवार सवर्णों व निर्धनों के मध्य खड़ी है। यह दीवार इतनी चौड़ी हो चुकी है कि इसे पार करना शायद असंभव ही है। देश चाहे स्वतंत्र हो चुका है, किंतु वर्ण-ईश्वर धर्म द्वारा बनाए गए ये समुदाय आज तक गुलाम हैं। आज भी दलित बस्तियाँ अभावों से ग्रस्त हैं और शायद सरकारी विभाग के अधिकारियों, पुलिस व न्यायपालिकाओं पर भी भेदभाव का बोलबाला है। यही कारण है कि यह समुदाय आर्थिक विकास से भी वंचित रहता है। दया पवार इस बेबस समुदाय की यातना को अभिव्यक्ति देकर क्रांति लाना चाहते हैं। दलित कविता के नकार व विद्रोहपूर्ण स्वर यातनामयी सामाजिक वेदना की अभिव्यक्त करती है। और इस चेतना से जो विद्रोह के स्वर निकलते हैं, वे नामदेव ढसाल की कविता से व्यक्त होते हैं, जिन्होंने ब्राह्मण जाति को परजीवी बताया है तथा ग्रंथों को एक ढोंग कहा है। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात भी जातिवाद बना रहा, ऐसे में भारत का आर्थिक विकास होना कैसे संभव है। दलित कवि की निगाह में दलित समुदाय का जीवन भी एक ठूंठ वृक्ष की भाँति है, जो फूल उगने की उम्मीद रखता है। दलित समुदाय जो कि अपने जीवन की प्रत्येक जरूरत के लिए सवर्ण समुदाय पर निर्भर करता है, दया पवार ऐसी व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं। दया पवार ने अपनी कविता में विषमतावादी समाज का चित्रण किया है। आजादी के पश्चात ऐसी स्थिति में सुधार होगा तथा समाज को छुआछूत जैसी बर्बर रूढ़िवादिताओं से मुक्ति मिलेगी। ऐसी आशा इस समुदाय को थी, किंतु संविधान में ऐसी रूढ़िवादिताओं के विरुद्ध कठोर नियम बनाने के बावजूद भी इन्हें समाज से दूर नहीं किया जा सका। इस अमानवीय व्यवस्था में जी रहा दलित समाज भला स्वयं को स्वाधीन कैसे कह सकता है। इस जर्जर व्यवस्था का व्याख्यान कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से किया है। इन कवियों ने डॉ. अंबेडकर की वैचारिकी को ही अपनी प्रेरणा माना है तथा एक समतावादी न्याय व स्वाधीनतावादी समाज के निर्माण की घोषणा की है।

'माँ' कविता का पाठावलोकन

ज्योति लांजेवार ने अपनी कविता 'माँ' में एक दलित स्त्री के जीवन का पूरा चित्रण किया है कि किस प्रकार एक दलित स्त्री अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के हेतु, अपने बच्चों का भरण-पोषण करने के लिए मेहनत करती है। रात-दिन मेहनत करने के पश्चात भी दलित महिला भरपेट खाना नहीं खा पाती, किंतु फिर भी मन में आस है कि बेटा अंबेडकर जैसा बने और समाज में परिवर्तन लाये। ज्योति लांजेवार ने अपनी कविता में एक दलित महिला की सारी व्यथा को समेट दिया है। एक-एक पंक्ति उसके जीवन की यथार्थता को व्यक्त करती है।

दलित स्त्री का जीवन संघर्ष और वर्ण व्यवस्था

दलित रचनाकार ज्योति लांजेवार ने अपनी कविता 'माँ' में इस विषमतावादी व्यवस्था के अंतर्गत काम के बंटवारे के तहत एक माँ की स्थिति को दर्शाया है, जो सामान्य सुविधाओं से भी वंचित है। ऐसी माँ जो कड़कती धूप में मेहनत करती है और अपने नन्हें से बालक को झूले में सुलाकर उसे देख भी नहीं पाती। ज्योति जी ने इस बात पर भी प्रश्न चिह्न लगाया है कि 'माँ' इतनी मेहनत के पश्चात भी भर पेट खाना नहीं खाती अर्थात उसे श्रम का न्यूनतम मूल्य भी नहीं मिलता। कवियत्री ऐसी दुर्दशा व्यक्त करके समाज में फैली असमानता को दर्शाती है। वर्णवादी समाज ने दलित वर्ग के साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया, उन्हें अपना दास माना परिस्थितियाँ अवश्य बदलीं किंतु दलित की स्थिति नहीं बदली। आज भी दलित वर्ग दासता का जीवन जीता है, मालिकाना हक सवर्ण समाज के पास ही है। दलित समुदाय लगभग साढ़े तीन हजार वर्षों से निर्धनता और निर्भरता की जिंदगी ही जी रहा है। आज भी, भारतीय आर्थिक व्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर अधिकतम अधिकार सवर्ण समाज का ही है। कविता में श्रम करने वाली माँ से लड़कर अपने बच्चों के सुनहरे भविष्य का सपना देखती है।

दलित स्त्री की श्रम साधना

अपने आस-पास सड़क बनाने के काम में व्यस्त महिलाओं को अक्सर हम देखते हैं, जो दूर किसी पेड़ के नीचे अपने बच्चों को बिठा देती हैं, किंतु उनके प्रति जिज्ञासा या उनकी स्थिति के प्रति कोई चिंता के भाव शायद हम में से किसी के मन में नहीं आते। हम यही सोचकर रह जाते हैं कि उनका जीवन ऐसा ही है, किंतु इस कविता में कवियत्री ने इस व्यवस्था पर सवाल खड़े किये हैं। रचनाकार ने दलित महिलाओं के संघर्ष को अनुभव किया है और वे इस स्थिति में परिवर्तन चाहती हैं। लोकतांत्रिक और आधुनिक कहे जाने वाले समाज में भी जाति की जंजीरें इतनी मजबूत हैं कि दलितों को आज भी अच्छे आमदनी वाले आर्थिक व्यवसाय नहीं मिल पाते। उन पर सवर्ण समाज का दबाव रहता है कि वे अपने परंपरागत व्यवसाय को करें। ब्राह्मणवादी समाज ने पाप-पुण्य और कर्म-काण्ड का ऐसा चक्र बनाया है कि स्वयं दलित समुदाय इसमें फंसकर ऐसे कार्यों को अपना भाग्य मानकर करते हैं। 'माँ' कविता में एक दलित मजदूर स्त्री इन रूढ़ीवादियों को नकार कर अपने बेटे को डॉ. अंबेडकर जैसा विद्वान और शिक्षित बनाना चाहती है। आज दलित समुदाय में परिश्रम करने वालों ने भी डॉ. अंबेडकर के विचारों को आत्मसात किया है और अपने बच्चों के लिए भविष्य में सुनहरा सपना देखा है। कवियत्री ने दलित महिला के जीवनसंघर्ष को बहुत ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। वह भूख से लड़ती हुई, तपती हुई, धूप में कार्य करके अपने बच्चों का भविष्य बनाना चाहती है। यह बहुत ही आश्चर्यजनक बात है कि भारत में कुल स्त्री आबादी का 65 प्रतिशत स्त्री मजदूर

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

वर्ग दलित समुदाय से है। दलित आदिवासी महिलाएं ही हैं जो जोखिमपूर्ण कार्य करती हैं, किंतु इसके बावजूद भी वह पेट भरने लायक पैसा नहीं कमा पातीं। दलित कविता में एक समतामूलक और स्वतंत्र समाज का स्वप्न देखा गया है। कविता में दलित माँ अपने बालक को अंबेडकर जैसा बनाना चाहती है। वो चाहती है कि आगे आने वाली पीढ़ी पढ़-लिखकर अपना जीवन संवारे, इसलिए वो आज इतना परिश्रम कर रही है।

भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टि

आज दलित कविता का विद्रोह, हजारों वर्षों से चली आ रही ऐसी प्रथा से है, जिसने दलित को समाज से निष्कासित रखा। समाज में कहीं भी दलितों को कोई सम्मान नहीं मिला। यहाँ तक कि 1977 में महाराष्ट्र के मराठवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम महाराष्ट्र सरकार ने डॉ. अंबेडकर रखने के लिए विधेयक पारित किया किंतु सवर्ण समाज ने सरकार पर दबाव बनाया तथा उनके इस निर्णय को वापिस लेने को बाध्य किया। इसका विरोध किया गया और राज्य में 'नामांतर' आंदोलन के नाम से लाँग मार्च किया गया जिसमें लाखों लोगों ने भाग लिया। यह अब तक का सबसे बड़ा 'लाँग मार्च' है। इस मार्च में सबसे अधिक संख्या में दलित स्त्रियां शामिल हुई थीं। इस संघर्ष के पश्चात सरकार ने मराठवाड़ा का नाम बदलकर डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर रखा। इस दलित अस्मिता आंदोलन में दलित स्त्रियों के सहयोग ने यह दिखा दिया कि वे ब्राह्मणवादी परंपराओं को तोड़ना चाहती हैं तथा समाज में समता, स्वतंत्रता और न्याय को लाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर सकती हैं। ब्राह्मणवादी परंपराओं ने दलित समुदाय के साथ अत्याचार किया, उन्हें एक गुलाम की भाँति जीवन जीने को मजबूर किया, आज दलित स्त्री अपने अधिकार को जनतांत्रिक संघर्ष से हासिल करना चाहती है।

दलित सौंदर्यबोध और जीवन दृष्टि

दलित कविता, दलित जीवन की यथार्थता की अभिव्यक्ति है। इसके माध्यम से तिरस्कृत जीवन की सच्चाइयों को नए अर्थ दिये जाने का प्रयास है अर्थात सवर्ण समाज से संबंधित कला के अविष्कार ने अलग से श्रम संबंधित जीवन के सौंदर्य की अभिव्यक्ति है। इसमें जीवन के कड़वे सच को उजागर किया जाता है, इसलिए परंपरागत कोमल पदावली का इसमें कोई स्थान नहीं है। दलित कविता की भाषा के संदर्भ में कमलेश्वर ने कहा है कि दलित कविता के सभी लेखक जीवन के गहरे संदर्भों से जुड़े हुए हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं में किताबी रचनात्मक भाषा के स्थान पर समान 'आम बोली' को रचनात्मक भाषा के रूप में लिया है। दलित जीवन के उत्पीड़न, शोषण, बहिष्करण, अवमानना आदि की अभिव्यक्ति काव्यशिल्प, शैली तथा रूप प्रतिमानों से नहीं की जा सकती। दलित कविता व्यक्तिगत अनुभवों से सराबोर है साथ ही यह समूहमन अनुभवों की अभिव्यक्ति है। दया पवार जी की कविता 'वृक्ष' किसी एक व्यक्ति की नहीं बल्कि यातना सहने वाले पूरे वर्ग की वेदना की अभिव्यक्ति करती है। दलित कविता में प्रतीकों या बिम्बों को इनके जीवन की सच्चाई को अभिव्यक्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है। 'वृक्ष' कविता में प्रयोग किये गए बिंब व्यक्तिगत तथा समूहगत जीवन स्थिति के अनेक आयामों को दर्शाते हैं। दलित समुदाय ने जो यातना और अपमान सदियों से सहा है वो आज उससे मुक्ति चाहता है और मुक्ति तभी मिल सकती है जब इस अमानवीय संस्कृति का विरोध किया जाये। ज्योति लांजेवार की कविता दलित स्त्री जीवन के संघर्ष को व्यक्त करने के लिए एक विशेष सौंदर्य शास्त्र का गठन करती है। परंपरागत साहित्य धारा ने इस शोषित वंचित समूह की वेदना को कभी अपनी कविताओं का विषय नहीं बनाया। इनकी वेदना को व्यक्त करने के लिए जरूरी है कि अभिजात्य भाषाशैली और काव्यगत मूल्यों को बदला जाए। कवियत्री ने 'माँ' कविता में दलित स्त्री के रोजमर्रा के जीवन के संघर्ष को सामान्य शब्दों से ही व्यक्त किया है जैसे 'झुलसती धूप में जलते-जलते कवियत्री ने इस कविता के माध्यम से दलितों के श्रम के बोझ से दबे इस जीवन का चित्रण किया है।

स्वपरख अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. मराठी दलित कविता की वैचारिक प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–भारतीय सामाजिक संरचना धार्मिक नियमों के अधीन बनी थी। इस सोपानीकृत व्यवस्था में दलितों का स्थान सबसे नीचा था। इस अपरिवर्तनीय व्यवस्था को ईश्वरीय बताकर चलाया जा रहा था। इस प्रकार की संरचना का निर्माता ब्राह्मणवाद था, जो शायद नहीं चाहते थे कि दलित समाज ऊपर उठे और उन्नति करे। धर्म की आड़ में बनाई गई जाति-संरचना में से कोई एक वर्ग दूसरे वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता था। जाति के अनुसार ही उनके कार्य भी बाँटे हुए थे, वे अन्य कोई कार्य नहीं कर सकते थे। इस जाति व्यवस्था की संरचना को ईश्वर, आत्मा, कर्मफल, भाग्यवाद, वर्ग आदि के साथ जोड़ा गया। इसे ईश्वरीय बताकर तीन हजार वर्षों तक दलितों का शोषण किया गया। इस पराधीनता के विरोध में उठाई गई आवाज ही दलित साहित्य है। दलित साहित्य इस अमानवीयता के विरुद्ध तथा समता व न्याय के प्रति समर्पित है। दलित साहित्य का केन्द्र-बिंदु केवल मनुष्य है, वह मनुष्य की महानता के गीत रचता व गाता है। वह ऐसे धर्म को नकारता है जिसने मनुष्य को गुलाम और उपेक्षित बना दिया। मराठी दलित कवि इस शोषित वर्ग की आवाज बनकर, उनके शोषण, प्रताड़ना और व्यथा की अभिव्यक्ति करते हैं। दलित कविता में उभर कर आया संघर्ष एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ नहीं है, अपितु यह संघर्ष जो एक वर्ग का दूसरे वर्ग से है। इसलिए दलित कविता यह घोषणा करती है कि इस कविता का नायक व्यक्ति नहीं बल्कि संपूर्ण समाज है। सामाजिक संरचना में व्याप्त शोषण, विषमता और सांस्कृतिक भ्रष्टता की यह कविताएँ अभिव्यक्ति करती हैं। दलित कविताओं का आरंभ सबसे पहले मराठी भाषा से हुआ किंतु बाद में सभी भारतीय भाषाओं में फैल गईं। दलित कवि इस जर्जर होती सामाजिक संरचना का विरोध करते हैं तथा एक समतावादी सामाजिक संरचना के निर्माण का संकल्प लेते हैं।

www.neerajbooks.com